Chap- 8

अष्टम्-अध्याय

उप -संहार

पूर्ववर्ती अध्यायों में प्रस्तुत अनुशीलन के समग्रतया मूल्यांकन के सन्दर्भ में स्वयं कवि दिनकर की ये पंक्तियाँ बरबस ध्यान में आती हैं -`जब छायावाद अपने परिपाक पर पहुँच चुका था, प्रसाद, पंत और निराला ये कवि हिन्दी पर छा चुके थे, महादेवी जी भी लगभग इसी प्रकार अपने युग पर छाने की तैयारी में थी और हमारी पीढ़ी (विशेषत: बच्चन और मैं) भी क्षितिज पर टिमटिमाने लगे थे । हम लोग अपना खेमा गाड़ने के लिए ऐसी जमीन की तलाश में थे- जहाँ छायावाद की कुहेलिका न हो ।`[१] कवि उपर्युक्त शब्दों के परिप्रेक्ष्य में अपनी कालानुसरण की क्षमता के साथ धीरे-धीरे काव्य-रचना के क्षेत्र में निरन्तर अग्रसर होता रहा । विचार और अनुभूति के सामंजस्य की साधना में संलग्न होकर छायावादी कुहेलिका से बाहर निकल कर वह मानो दिनकर की ही भाँति हिन्दी साहित्याकाश पर अपनी स्वर्ण- रश्मियाँ फैलाकर आलोक दान करता रहा ।

यह निर्विवाद सत्य है कि मैथिलीशरण गुप्त के बाद यदि हिन्दी के किसी कवि को राष्ट्रकवि की उपाधि मिली तो वह दिनकर ही हैं । जिस तरह गुप्त जी ने `भारत-भारती` लिखकर देश की दीनता-पराधीनता के गीत गाये तथा अपनी संस्कृति की धारा को प्रवाहशील बनाने के लिए उसमें छाये हुए गंदले शैवालों को दूर करने का सन्देश दिया। उसी प्रकार दिनकर उन शैवालों के मूलोच्छेदन के लिए क्रान्ति के शंख को फूँककर भीषण अशनि का निर्घोष टंकार करते रहे । प्रत्येक कवि की अपनी निजी चेतना, रुचि तथा परिवेशगत संस्कार होते हैं । दिनकर जिस परिवेश से आये थे, वह आम जनता का समाज व परिवेश था जो अपनी सांस्कृतिक परम्परा तथा इतिहास से जुड़ा हुआ था । उन्होंने कभी भी उस परिवेश को नहीं छोड़ा और उनकी कविता का केन्द्र-बिन्दु भी सदैव यही रहा । उन्होंने

अपनी पुस्तक काव्य की भूमिका में लिखा है -"कविताएँ बराबर वर्तमान की कुक्षि में पैदा होती हैं और वर्तमान से उठकर ही उनकी झंकार अतीत और भविष्य का स्पर्श करती है।---------- समय का वातावरण काव्य के पौधे की खाद है। और सत्कवि उससे भागने की कोशिश नहीं करता, जिसे हम शाश्वत और चिरन्तन कहते हैं। वह किसी एक युग की संपत्ति नहीं है। वह प्रत्येक युग में वर्तमान रहता है और प्रत्येक युग उसकी व्याख्या अपनी भाषा व अपने मुहाविरों में किया करता है," दिनकर के काव्य के अनुशीलन द्वारा अनुसंधात्री निःसंदिग्ध रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि कवि ने काव्य-विषयक अपनी उपर्युक्त अवधारणा को पूर्णतया चरितार्थ किया है। उनके गंभीर अध्ययन से विकसित विचारों में तथा अनेक महत्त्वपूर्ण कविताओं में ओज और उद्घोष के साथ रूपायित अनुभूतियों में पूर्णतया सामंजस्य दिखायी पड़ता है।

जिस समय दिनकर का आविर्भाव हुआ, भारतीय परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े शिथिल प्राय से थे। हिन्दी साहित्य भी द्विवेदी-युग के बाद छायावाद की रंगीनियों में अंग्रेजी रोमाण्टिसिज्म से प्रभावित होकर सौन्दर्य के गीत गा रहा था। इसी समय राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों ने एक ओर ऐतिहासिक अवबोध से संयुक्त सांस्कृतिक-राष्ट्रीय कविताएँ लिखीं तो दूसरी ओर आजादी का आह्वान करने वाली तथा बलिदान की चेतना को प्रकाशित करने वाली कृतियाँ प्रदान कीं। छायावाद के भी कुछ कवियों का योगदान इस दिशा में अविस्मरणीय है। इनमें से अनेक कवि स्वतंत्रता-संग्राम की आहुति में भाग लेने वाले सक्रिय सेनानी थे। इसी धारा को लक्ष्य में रखकर दिनकर ने अपनी काव्य-रचना

आरम्भ की । यद्यपि उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में स्वयं भाग नहीं लिया। वरन् अंग्रेजी शासन के अंतर्गत कार्य करते रहे तथापि उन्होंने देश-भक्ति तथा क्रान्ति की रचनाएँ ही लिखीं । इसके लिए अनेक आलोचकों ने उनकी आलोचना भी की है, किन्तु यह उतनी महत्त्वपूर्ण बात नहीं, जितनी कि विरोधी स्थिति में रहते हुए देश-प्रेम के गीत लिखने की बात थी। अत: दिनकर राष्ट्र के कवि थे और इसी रूप में उनकी महत्ता हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित रही है और भविष्य में रहेगी ।

इस अध्ययन का प्रतिपाद्य उनके काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन है । यह विचारणीय प्रश्न है कि दिनकर ने संस्कृति के आलोक में ही अपनी कविता क्यों लिखी । वे अपनी कविता के किसी भी पक्ष को उठाते हैं तो केवल संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ही उसको देखते हैं । हम यह मान सकते हैं दिनकर भारतीय संस्कारों से इतने अधिक प्रभावित थे कि वे उसका व्यामोह कभी छोड़ नहीं पाये । दूसरा उल्लेखनीय तथ्य उनका इतिहास प्रेम है । वैसे तो वे इतिहास के विद्यार्थी रहे, परंतु उनकी जो ममता इतिहास के प्रति रही, उसे वे कभी विस्मृत नहीं कर पाये । उनकी संपूर्ण काव्य-साधना पर दृष्टि डालने से ये स्पष्ट हो जाता है कि चाहे वह राष्ट्रीय कविता हो, प्रेम-सौन्दर्य की कविता हो या जीवन से निराश द्वन्द्वग्रस्त मनुष्य की प्रभु के चरणों की वन्दना । कहीं भी सांस्कृतिक चेतना से उसे वे पृथक् नहीं कर सके । उन्होंने भारतीय संस्कृति का इतना गहन अध्ययन किया था, जिसके परिणाम स्वरूप उनका `संस्कृति के चार अध्याय` ग्रंथ है । इसमें भी भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक पक्ष को ध्यान में रखकर ही उसका विवेचन प्रस्तुत हुआ है । उनका अपना सृजन क्षेत्र तो काव्य का था, किन्तु `संस्कृति के चार अध्याय` लिखकर उन्होंने हिन्दी गद्य-साहित्य को भी अक्षय-निधि प्रदान की है । भारतीय संस्कृति के लिए स्वयं कवि की ये पंक्तियाँ युक्ति संगत हैं -

और यह याद रहे
कि परम्परा चीनी नहीं, मधु है ।
न द्रविड़ है न आर्य
न परम्परा का हर प्रहरी
पुरी का शंकराचार्य है ।[3]

इनकी उपर्युक्त पंक्तियाँ उनकी इतिहास-चेतना की द्योतक हैं। दिनकर को इस सांस्कृतिक काव्य-सृजन की प्रेरणा संभवत: उस सांस्कृतिक पुनर्जागरण से मिली हो, जो उनके पूर्ववर्ती कवियों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत रहा था । पुरानी परंपरा को तोड़ने की प्रथा व नवीन जीवन-मूल्यों की स्थापना का संदेश इसी सांस्कृतिक-पुनर्जागरण ने दिया था । इन विचारकों ने भी अपने उज्ज्वल एवं वैभव सम्पन्न इतिहास से प्रेरणा लेकर ही समाज में व्याप्त रूढ़ियों व विभीषिकाओं का खण्डन कर एक नये समाज की स्थापना का पथ प्रशस्त किया था । भारतेन्दु से लेकर दिनकर तक सभी उपर्युक्त पुनर्जागरणों से प्रेरित व प्रभावित थे । भारतेन्दु और उनके सहयोगियों ने केवल चर्चा की, द्विवेदी-युग में आकर वह समाज-सुधार का संदेश बन गयी, किन्तु दिनकर ने जिस ओज और वीरता से उसको काव्य का माध्यम बनाया, नि:सन्देह वह युगानुकूल व युग की माँग को पूरा करने वाला था । परम्पराओं के खण्डन व सामाजिक-वैषम्य का जो दर्द कवि की वाणी से फूटा है वह गांधी-बुद्ध की अहिंसा व करुणा तथा उनके निजी चिंतन का ही प्रतीक है । जिसे भारतीय संस्कृति की ही विशेषता से प्रदत्त कहा जा सकता है । इसलिए उनका संपूर्ण काव्य भारतीय संस्कृति के वैचारिक-चिंतन व ओज के परिवेश को ध्यान में रखकर लिखा गया है, जो आधुनिक युग की समस्याओं का निदान प्रस्तुत करता है । इस कारण उनके काव्य को केवल राष्ट्रीय न कहकर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कहना अधिक उपयुक्त जान पड़ता है ।

सांस्कृतिक अध्ययन के महत्त्वपूर्ण पक्षों को ध्यान में रखकर ही यह अनुशीलन किया गया है। यद्यपि यह एक व्यापक विषय है, जिसके समक्ष लेखिका की अपनी निजी सीमाएँ भी हैं। विविध सांस्कृतिक पक्षों के अंतर्गत कवि की समस्त काव्य-साधना को समेटना एक कठिन कार्य है। दूसरी ओर दिनकर की निजी सांस्कृतिक दृष्टि तथा संस्कृति विषयक विद्वानों के विवेचन इन दोनों को दृष्टि-पथ में रखकर अध्ययन, प्रक्रिया को अपनाया गया है । लेखिका का विनम्र अनुरोध है कि जहाँ कहीं त्रुटियाँ हों उसे सुधीजन क्षमा करेंगे ।

दिनकर युग की सृष्टि और स्रष्टा, युग की प्रेरणा व प्रेरक दोनों हैं। इतिहास का एक लम्बा काल-खण्ड इनके साहित्यिक जीवन के साथ समाविष्ट है। इस काल खण्ड के अंतर्गत मानव-जीवन, समाज व राजनीति में हुए परिवर्तनों को इन्होंने सजग, सतर्क नेत्रों से न केवल देखा है, वरन् उससे प्रभावित होकर भारतीय जनता को अपने काव्य के माध्यम से अनुप्राणित करने का प्रयास भी किया है । सर्व-साधारण तक अपनी बात पहुँचाकर उन्होंने अपने कवि-धर्म का पालन किया है और इस कार्य में उन्होंने समय की गतिविधि, जनता की चित्तवृत्ति तथा युगीन चेतना को देखा एवं समझा है । यह कहा जा सकता है कि ये अपने समय के सबसे अधिक जागरूक और विकासशील तथा सार-ग्राहिणी प्रवृत्ति के कवि हैं । जितनी सचेष्ट सामाजिक चेतना इनके काव्य में अभिव्यक्त हुई है, वह इन्हें जन-जीवन का कवि ही नहीं बनाती, बल्कि हिंदी में इनके लिए एक विशिष्ट स्थान का निर्धारण भी करती है ।

राजनीतिक दासता, आर्थिक-शोषण ने कवि की कोमल कल्पनाओं को

दबाकर क्रान्ति का आह्वान करने की प्रेरणा दी। इन्होंने महसूस किया- आर्थिक वैषम्य अन्याय है । इसे दूर करने के लिए क्रान्ति की आवश्यकता होगी। क्रान्ति के लिए सर्वप्रथम जन-जागृति चाहिए। अत: इन्होंने शोषण -सत्ता , शोषक वर्ग एवं उनके द्वारा दी गयी पराधीनता के विरुद्ध विरोध का भाव जगाने, दलितों के दिल की चिंगारी, युग मर्दित जीवन की ज्वाला को फकफोर कर जगाने का सराहनीय प्रयास किया तथा इसके लिए अपनी कविता को क्रान्ति का माध्यम बनाया और उसमें कुछ सीमा तक सफलता भी प्राप्त की ।

उनकी मान्यता है कि भारत के दलित-गलित समाज का पुनरुत्थान सुधारों के द्वारा नहीं, अपितु क्रान्ति के प्रबल आवेग से हो सकता है। देश की जर्जरावस्था व भीषण वैषम्य देखकर इनका हृदय हाहाकार कर उठता है और इस पाप को भस्मीभूत करने के लिए ये अग्नि-स्फुलिंग प्रज्ज्वलित करना चाहते हैं। वे इसके लिए राष्ट्रीय जन-जागरण का आह्वान ही नहीं करते वरन् ज्योति-पुंज बनकर सबको इस विषमता को मिटाने के लिए प्रेरित करते हैं । कवि साम्यवाद चाहता है, किन्तु अर्थ-विषमता को दूर करने के लिए। ध्वंस के स्थान पर मानवतावादी नैतिक भावना को जो आज का युग-धर्म है के रूप में प्रतिष्ठित करने का समर्थक है ।

क्रांति के कवि होने पर भी दिनकर ने मनुष्य के लिए प्रेम और सौन्दर्य के गीतों की भी रचना की है। नारी के रूप-सौन्दर्य की, उसकी रसमयी भाव-भंगिमा के उन्मादकारी प्रभाव का इन्होंनें अपने काव्य `रसवंती` व `उर्वशी` में सुन्दर व

मनोहारी वर्णन किया है। प्रेम की विभिन्न छवियों को मनोविज्ञान के धरातल पर अंकित कर अपनी काव्य-शक्ति का परिचय दिया है। यद्यपि यह प्रेम मानवीय धरातल पर ही प्रारंभ होता है किन्तु दिनकर जी ने उसे भारतीय संस्कृति की मान्यताओं से सायास जोड़कर उसे कामाध्यात्म का सुन्दर अभिधान दे दिया है। जबकि यह शुद्ध दैहिक धरातल पर अवतरित नर-नारी की सनातन वासना है, यदि दिनकर इसे कामाध्यात्म न कहकर उच्च स्तर पर अवस्थित पवित्र-प्रेम की संज्ञा भी देते तो यह माना जा सकता था, किन्तु अध्यात्म जो कि अपने आप में प्रभापुंज मय है उसे काम से संगुम्फित करना या एक कृत्रिम ज्योतिर्मय आवरण दे देना कुछ उचित प्रतीत नहीं होता। फिर भी यह कहा जा सकता है कि दिनकर 'काम' के सन्दर्भ में भी अपने संस्कृति प्रेम को विस्मृत नहीं कर पाये। यही कारण है कि उनकी 'उर्वशी' को छद्म आवरण पहनना पड़ा। वैसे देखा जाय तो नारी के प्रति उनकी दृष्टि स्वस्थ एवं संतुलित रही है। प्रेम, मिलन, विरह और विच्छेद की भूमि पर जीवन के चिरन्तन रूपों की जो झांकियाँ दिनकर ने प्रस्तुत ~~कि~~ की हैं, उनमें भी नारी अथवा प्रेयसी की कल्पनाएँ प्राय: ग्राम्य जीवन से ली गयी हैं। कदाचित यही कारण है कि प्रगतिवादी होने पर भी इनके वर्णन और चित्रांकन सांस्कृतिक मान्यताओं व परंपराओं से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। एक आध अपवाद को छोड़कर ये नागरीय संस्कृति में पली नारियों को रंगीन तितलियों के रूप में देखकर क्षुब्ध होते हैं और उसे अपनी संस्कृति, धर्म, मर्यादा, शील व संकोच की याद दिलाते हैं। नारी की चरम सार्थकता को इन्होंने मातृत्व में देखा है। कुछ भी कहा जाय यदि इनके सौन्दर्य-गीतों में एक ओर श्रृंगारिकता के छींटे और प्रेम के तत्त्व हैं तो जातीय उन्नयन के भाव तथा देशानुराग की लहरें भी। काव्य-यात्रा का यह पथिक मानों थकने पर वृक्ष की शीतल छांव में बैठकर श्रृंगार के गीत लिखकर विश्राम करता प्रतीत होता है। किन्तु कुछ समय की इस विश्रान्ति के बाद पुन: क्रान्तिकारी अभियान की ओर चल देता है।

कालानुसरण की क्षमता दिनकर के काव्य का सबसे अधिक उल्लेखनीय पक्ष है। उन्होंने अपने काव्य में देश की बदलती हुई राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का सही आकलन कर तज्जन्य चेतना को वाणी दी है । साम्प्रदायिक संकीर्णता और समाज-सुधार की भावना से इनका पीड़ित हृदय मानवता की खोज में जुटा हुआ है । गौरवपूर्ण अतीत के गीत गाकर इन्होंने जनता में स्वाभिमान को जगाया तथा आर्त जनता की अनुभूतियों को वाणी दी है । इन्होंने समय की पुकार पर ही अपना भैरवी-हुंकार किया है । स्वाधीनता के पूर्व की कविताओं को पढ़कर देश के नवयुवकों में ओज व पौरुष का संचार करने में इनकी कविताएँ समर्थ रही हैं, जिसे कि सामयिक राष्ट्रीयता कहा जा सकता है ।

दिनकर हिन्दी साहित्य के ऐसे प्रथम कवि हैं जिन्होंने मानव जीवन की चिरंतन समस्या युद्ध को द्वितीय महायुद्ध के भीषण संहार, हाहाकार से प्रेरित हो उसे काव्य में स्थान दिया और उसके मूलभूत कारणों का विश्लेषण करते हुए, पाप और पुण्य तथा युद्ध के पक्ष-विपक्ष में अपने विचार व्यक्त करते हुए उसके समाधान की सैद्धांतिक भूमिका प्रस्तुत की है । यह कवि के चिन्तन का गुरु-गंभीर परिणाम कहा जा सकता है। यहां पर भी दिनकर अपने परंपरा के मोह को छोड़ नहीं पाये । आधुनिक युग की युद्ध की समस्या को उन्होंने प्राचीन महाभारत के आख्यान से जोड़कर भारतीयता का ही परिचय नहीं दिया, अपितु यह भी प्रमाणित कर दिया कि भारतीय जनता अपनी संस्कृति व धर्म से प्रेम करती है। नितान्त आधुनिक विज्ञान की समस्या अवश्य इस आख्यान में आरोपित लगती है किन्तु उसे पढ़ने वाला आज का मानव है। इसलिए इसे प्रासंगिक ही कहा जा सकता है। युद्ध-दर्शन का सुन्दर समन्वय 'कुरुक्षेत्र' की देन है ।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि दिनकर को अपनी

पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि दिनकर को अपनी संस्कृति व इतिहास से अत्यन्त प्रेम रहा है। इनका कवि हृदय भारतीय इतिहास के मार्मिक-स्थलों से पूर्ण परिचय रखता है। इनकी संपूर्ण काव्य-साधना में इतिहास के प्रति प्रबल आग्रह रहा है । दिनकर जी की शायद ही कोई ऐसी काव्य-कृति होगी, जिसमें अतीत के चित्र न हों। इनके काव्य में इतिहास अपने गौरव के साथ-साथ वर्तमान के प्रति संवेदनशील होकर अपनी संपूर्ण चेतना के साथ बोलता है । प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों से गौरवान्वित कराते हुए ये भारत वासियों को आज की दीन-हीन दशा से परिचित कराते हैं। इतिहास के इन स्थलों का वर्णन कवि को प्रिय नहीं है बल्कि इसका कारण है वे देशवासियों को उनके प्राचीन गौरव के दृश्यों को प्रत्यक्ष करके उनकी संस्कृति का साक्षात्कार कराता हुआ उत्थान की प्रेरणा देता है । ऐसा करके कवि अपनी संस्कृति-प्रियता, परंपरा पालन और ऐतिहासिक अवबोध का परिचय देता है ।

पूर्व निर्दिष्ट तथ्यों के प्रकाश में मूलत: एक राष्ट्रीय कवि होते हुए भी दिनकर राष्ट्रीयता और प्रणय, सौन्दर्य और रोमांस के बीच चलने वाले एक मानसिक द्वन्द्व से प्रारंभ से ही आबद्ध रहे हैं और इस द्वन्द्वग्रस्त स्थिति में भी मुख्यत: एक राष्ट्रीय कवि के रूप में ही जाने जाते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका नाम युद्ध,क्रान्ति और प्रेम के कवि के रूप में ही जाना जाएगा, इसमें सन्देह नहीं। शृंगारिक आराधना व राजनीतिक चेतना की समानान्तर गतिशीलता इनके काव्य की विशेषता है । इस सन्दर्भ में डॉ० राजेन्द्र मिश्र का यह कथन सटीक कहा जा सकता है `दिनकर का परिकल्पित प्रतीक पुरुष उनके कृतित्व में देश-प्रेम और व्यक्तिगत रागों के दो एकांत स्तरों की परिक्रमा करता है।

'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' इनकी दो परिणातियाँ हैं। दिनकर चाहकर भी इन प्रवृत्तियों को एक निश्चित केन्द्र पर संग्रथित नहीं कर पाते[4] किन्तु साथ ही भारतीय संस्कृति के समन्वयवादी दृष्टिकोण का जैसा ओजस्वी, गंभीर सुचिंतित और व्यवस्थित रूप दिनकर के काव्य में मिलता है। वह बहुत कम कवियों के काव्य में प्राप्य है ।

स्वाधीनता के पूर्व तक जो कवि युद्ध और क्रान्ति के गीत गाता रहा था, वही अब विश्व-मानव की ओर अभिमुख हो गया। मानवता और अन्तर्राष्ट्रीयता की यह भावना हमारी संस्कृति की देन है । दिनकर जी की राष्ट्रीयता अपनी संकुचित सीमाओं को पारकर अब विश्व में अपनी संस्कृति के बल पर मानवता, करुणा व समता के गीत गाने लगी, गांधी जी की अहिंसा व बुद्ध की करुणा के वे गायक बन गये । ऐसा नहीं कि वे अपने मूल स्वर क्रांति को भूल गये हों, किन्तु क्रान्ति को वे वहीं तक ग्राह्य मानने लगे । जब तक कि प्रतिद्वन्द्वी के आघात का बदला न लेना हो ।

समय व पारिवारिक संघर्षों से थका-हारा कवि अपने अन्त समय में ईश्वर की शरण में चला गया तथा प्रभु-चरणों में ही शान्ति प्राप्त करने की कोशिश में संलग्न रहा। दिनकर को अपनी पारम्परिक आस्थाओं पर विश्वास ही नहीं, ~~बहुत~~ गहरी श्रद्धा भी थी। इसीलिए संसार के माया-मोह से दूर रहकर शायद वह कुछ दिन शान्ति से व्यतीत करते हुए ही अपने अन्त समय में तिरुपति के चरणों में ~~संसार~~ सागर की अगाध जल राशि के बीच अपना कविता-पाठ करने गया। लगता है मानो निजी-जीवन में दीर्घकाल तक विषपान करता हुआ यह साहित्यिक नीलकंठ

जीवन भर प्राणदायिनी काव्य-गंगा को प्रवाहित करता रहा हो। इस प्रकार देखा जाय उनका संपूर्ण जीवन-साहित्य-सर्जना में ही व्यतीत हुआ है। काव्य ही नहीं, गद्य-निबन्ध, समीक्षा आदि लिखकर भी उन्होंने अपनी विद्वता का परिचय दिया है। इनका गद्य-साहित्य इनके चिंतनशील व्यक्तित्व का विवेक प्रकट करता है। कविता व गद्य दोनों में ही आवेग दिखायी देता है। चाहे वह देश-प्रेम की कविता हो या शृंगार की। इनका आवेग सदा प्रबल होकर काव्य की अभिव्यक्ति बना है। इनकी काव्य-प्रतिभा देश-विदेश की काव्य-प्रवृत्तियों को आत्मसात कर और युग-जीवन के प्रति सचेत होकर उत्तरोत्तर विकासोन्मुख रही है। उसमें नित्य नूतन सृष्टि करने की क्षमता अक्षुण्ण है। श्री विश्वनाथ मिश्र ने उनके काव्य के सन्दर्भ में उचित ही लिखा है-` काव्य में समुचित प्रभाव का विशेष महत्त्व होता है। दिनकर की कृतियों में जिन वर्ण्यों का आकलन और अंकन किया गया है। भाषा की जैसी ओजस्विनी ~~प्रस्तबकि~~ प्रासादिकता का निर्वाह किया गया है वही नहीं, वैसी प्रभावान्विति भी अन्यत्र दुर्लभ है।`[५]

इस प्रकार राष्ट्रीयता, कला की उपयोगिता, हृदयवाद और बुद्धिवाद, संस्कृति, भारतीय संस्कृति की विशेषता, विश्व संस्कृति के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति, ~~की~~ आधुनिकता और भारतीय संस्कृति आदि विषयों का वैचारिक मंथन दिनकर के साहित्य में जितना हुआ है, उतना आधुनिक युग के कम साहित्यकारों के साहित्य में मिलता है।[६] आधुनिकता के ग्रहण की सीमा व प्राचीन संस्कृति के त्याग की आवश्यकता को लेकर आधुनिक विचारकों में जो वैचारिक संघर्ष चलता रहा, दिनकर की कविताओं में उसकी व्यंजना है। वे उस परंपरा को उपयोगी मानते हैं, जो आधुनिक जीवन को गति दे सके -

परंपरा और क्रांति में
संघर्ष चलने दो,
आग लगी है, तो सूखी टहनियों को जलने दो ।
मगर जो टहनियाँ
आज भी कच्ची और हरी हैं,
उन पर तो तरस खाओ
मेरी एक बात तुम मान जाओ ।
परंपरा जब लुप्त होती है,
लोगों की आस्था के आधार
टूट जाते हैं
उखड़े हुए पेड़ों के समान
वे अपनी जड़ों से छूट जाते हैं
परंपरा जब लुप्त होती है
लोगों को नींद नहीं आती
न नशा किए बिना
चैन या कल पड़ती है ।
परंपरा जब लुप्त होती है
सभ्यता अकेलेपन के
दर्द से मरती है ।[7]

उपर्युक्त पंक्तियों से ये संकेत मिलता है कि दिनकर में भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा की बेचैनी भर रही । इसीलिए उन्होंने कभी इतिहास चेतना के राग में डूबकर सांस्कृतिक विशेषताओं का उद्घाटन करने वाली कविताएँ लिखीं, कभी स्फुट निबंधों और भाषणों के माध्यम से उसी छटपटाहट को व्यक्त किया और कभी

इतिहास के गहन गर्भ में डूबकर अनेक सहस्त्राब्दियों की विभिन्न विचारधाराओं का गूढ़ विश्लेषण प्रस्तुत किया । अत: समग्रतया मूल्यांकन तथा पूर्ववर्ती अध्यायों में दृष्टिगत ~~xxxxx~~ कराये गये अध्ययन- पक्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दिनकर के काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन वस्तुत: इस कवि की समग्र काव्य-चेतना को पूरा-पूरा न्याय पावना दे सकता है। केवल राष्ट्रीय काव्य-धारा के सन्दर्भ में उनके प्रदेय का अध्ययन -अनुशीलन एक महत्त्वपूर्ण पक्ष को प्रकाश में लाता है, किन्तु उपर्युक्त निष्कर्षों के प्रकाश में कवि की समस्त काव्य-चेतना उसमें नहीं आ पाती ।

विगत अनेक वर्षों से काव्य के आधार पर सांस्कृतिक मूल्यांकन की जो परम्परा हिन्दी ही नहीं, इतिहास, पुरातत्व, समाज- विज्ञान आदि विषयों में दिखायी पड़ती है। ऐसे अध्ययनों के आधार पर अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की भी खोज हुई है तथा अनेक अध्ययन ऐसे हैं जो अधीत युग के सांस्कृतिक युग-पुरुष को साकार करने में सक्षम हुए हैं । आधुनिक काव्य के अध्ययनों में जितना ध्यान साहित्यिक प्रवृत्तियों, राजनैतिक विचारधाराओं और यूरोपियन साहित्य के प्रभाव की ओर दिया गया है । उतना जीवन की सूक्ष्म-अतल गहराइयों को प्रकाशित करने वाले जन-जन के स्पंदन को प्रतिध्वनित करने वाले सांस्कृतिक अध्ययनों की ओर कम ही अध्येताओं का ध्यान गया है । प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य के सांस्कृतिक अध्ययन से जीवन के ऐसे पक्षों को बड़ी क्षमता और सूक्ष्मता के साथ उभारा गया है । इतना ही नहीं डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल तथा भगवतशरण उपाध्याय प्रभृति विद्वान तो इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति भी प्राप्त कर चुके हैं। अनुसंधात्री इस अध्ययन के साथ यह अनुभव करती है कि

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आधार बनाकर इस प्रकार के सांस्कृतिक अध्ययन उच्चस्तरीय, अनुशीलन शोध और उत्कृष्ट विवेचन के साध्य बन सकते हैं । इस दिशा में उसका प्रयास अपनी सीमित क्षमताओं का द्योतक कहा जा सकता है । उसका विश्वास है सुमित्रानंदन पंत, निराला, नरेन्द्र शर्मा, मोहनलाल महतो 'वियोगी', सोहनलाल द्विवेदी जैसे अनेक कवियों के काव्यों का सांस्कृतिक अनुशीलन ऐसे ही अनेक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के साध्य बन सकते हैं ।

--

सन्दर्भ- संकेत :

१- मेरे समकालीन, धर्मयुग, २२ सितंबर सन् १९७१ ।

२- दिनकर, काव्य की भूमिका, पृष्ठ-२

३- दिनकर, हारे को हरिनाम, पृष्ठ-४८

४- डा० राजेन्द्र मिश्र, समकालीन कविता सार्थकता और समझ -पृ० ४५

५- डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिन्दी का सामयिक साहित्य, पृष्ठ-४५०१ ११६

६- डा० छोटेलाल दीक्षित- दिनकर सृष्टि और दृष्टि- पृष्ठ-१६

७- दिनकर, हारे को हरिनाम, पृष्ठ- ४८

0000
0000
00
ʊ

परिशिष्ट `क`

दिनकर का सम्पूर्ण साहित्य

काव्य	प्रकाशन- काल
१- प्रणभंग	सन् १९२९
२- रेणुका	,, १९३५
३- हुंकार	,, १९३९
४- रसवन्ती	,, १९४०
५- द्वन्द्वगीत	,, १९४०
६- कुरुक्षेत्र	,, १९४६
७- सामधेनी	,, १९४६
८- बापू	,, १९४७
९- इतिहास के आँसू	,, १९५१
१०- धूप और धुँआ	,, १९५१
११- रश्मिरथी	,, १९५२
१२- दिल्ली	,, १९५४
१३- नीम के पत्ते	,, १९५४
१४- नीलकुसुम	,, १९५४
१५- चक्रवाल	,, १९५६
१६- कविश्री	,, १९५७
१७- सीपी और शंख	,, १९५७
१८- नये सुभाषित	,, १९५७
१९- उर्वशी	,, १९६१
२०- परशुराम की प्रतीक्षा	,, १९६१

		प्रकाशन काल
२१-	कोयला और कवित्व	सन् १९६४
२२-	मृत्ति चिलक	,, १९६४
२३-	आत्मा की आँखें	,, १९६४
२४-	दिनकर की सूक्तियाँ	,, १९६५
२५-	हारे को हरिनाम	,, १९७०
२६-	संचयिता	,, १९७३
२७-	रश्मिलोक	,, १९७४

गद्य :

१-	मिट्टी की ओर	सन् १९४६
२-	अर्द्धनारीश्वर	,, १९५२
३-	रेती के फूल	,, १९५४
४-	हमारी सांस्कृतिक एकता	,, १९५४
५-	संस्कृति के चार अध्याय	,, १९५६
६-	उजली आग	,, १९५६
७-	देश-विदेश	,, १९५७
८-	राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता	,, १९५८
९-	काव्य की भूमिका	,, १९५८
१०-	पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण	,, १९५८
११-	वेणुवन	,, १९५८
१२-	धर्म, नैतिकता और विज्ञान	,, १९५९
१३-	वट-पीपल	,, १९६१

		प्रकाशन काल
१४-	शुद्ध कविता की खोज	सन् १९६६
१५-	साहित्यमुखी	,, १९६८
१६-	राष्ट्रभाषा आन्दोलन और गांधी जी	,, १९६८
१७-	हे राम	,, १९६९
१८-	संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ	,, १९६९
१९-	मेरी यात्राएँ	,, १९७०
२०-	भारतीय एकता	,, १९७०
२१-	भन चेतना की शिखा	,, १९७३
२२-	आधुनिक बोध	,, १९७३
२३-	विवाह की मुसीबतें	,, १९७४

बाल- साहित्य :

१-	धूप छाँह	,, १९६४
२-	चित्तौर का साका	,, १९६४
३-	मिर्च का मजा	,, १९५१
४-	सूरज का व्याह	,, १९५५
५-	भारत की सांस्कृतिक कहानी	,, १९३५
६-	लोकदेव नेहरु	,, १९६५

परिशिष्ट 'ख' - सन्दर्भ ग्रन्थ

१-	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	प्रिय प्रवास
२-	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी	आधुनिक हिन्दी साहित्य भारती भंडार, इलाहाबाद
३-	,, ,,	नया साहित्य : नये प्रश्न
४-	,, ,,	हिंदी साहित्य बीसवीं शताब्दी संशोधित संस्करण, लोकभारती-प्रकाशन, इलाहाबाद
५-	डा० कमला कनोड़िया	भारतेन्दुकालीन हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रथमसंस्करण१९७१ विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
६-	कामेश्वर शर्मा	दिग्भ्रमित राष्ट्रकवि
७-	किशोरीलाल गुप्त	भारतेन्दु एवं अन्य सहयोगी कवि, प्रथम संस्करण।
८-	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'	मर्यादा, प्रथम संस्करण।
९-	गुलाबराय	काव्य-विमर्श, प्रथम संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
१०-	डा० गोविंदचन्द पाण्डे	मूल्य-मीमांसा, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
११-	डा० गौरीनाथ रस्तोगी	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन,
१२-	छोटेलाल दीक्षित	दिनकर सृष्टि और दृष्टि, प्रथम संस्करण अभिलाषा प्रकाशन, कानपुर।
१३-	जयशंकर प्रसाद	काव्य, कला और निबंध, भारतीय भण्डार, इलाहाबाद।

१४- जयशंकर प्रसाद कामायनी, भारतीय भण्डार,इलाहाबाद
१५- जयशंकर प्रसाद स्कन्दगुप्त ,, ,,
१६- जयशंकर प्रसाद चन्द्रगुप्त ,, ,,
१७- जयशंकर प्रसाद कानन कुसुम ,, ,,
१८- डा० दामोदर धर्मानन्द कोसाम्बी- प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, अनु०गणाकार मुले, द्वितीय संस्करण,राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
१९- धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास,नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
२०-सं० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कोश,द्वितीय संस्करण, भाग-१ पारिभाषिक शब्दावली, नागरी प्रचारिणी सभा-वाराणसी ।
२१- डा० नरवणे आधुनिक भारतीय चिन्तन ।
२२- सं० नगेन्द्र हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास, दशम खण्ड नागरी प्रचारिणी सभा ।
२३- ,, हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।
२४- ,, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।
२५- ,, सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।
२६- डा० प्रसन्नकुमार आचार्य भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता ।
२७- डा० प्रतिमा जैन दिनकर, काव्य कला और दर्शन ग्रंथम्, रामबाग-कानपुर ।

२८- सं० प्रभाकरेश्वरप्रसाद उपाध्याय)
दि०ना० म उपाध्याय) प्रेमघन सर्वस्व, प्रथम भाग

२६- डा० भगवतशरण उपाध्याय - सांस्कृतिक भारत, प्रथम संस्करण

३०- ,, ,, भारतीय समाज शास्त्र का ऐतिहासिक विश्लेषण, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

३१- भगवतीशरण सिंह लोकमान्य तिलक, प्रकाशन विभाग,मध्यप्रदेश सरकार ।

३२- डा० महेन्द्रनाथ राय- नवजागरण और छायावाद, प्रथम संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

३३- डा० मदनगोपाल गुप्त- मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति, प्रथम संस्करण , नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयीदिल्ली

३४- ,, ,, भारतीय साहित्य एवं संस्कृति, प्रथम संस्करण, कला प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

३५- महावीर प्रसाद द्विवेदी- सुमन, जन्मभूमि ।

३६- महादेवी वर्मा शृंखला की कड़ियां ।

३७- मैथिलीशरण गुप्त स्वदेश संगीत, साहित्य सदन, चिरगांव, फांसी ।

३८- ,, ,, साकेत, ,, ,,

३९- ,, ,, यशोधरा ,, ,,

४०- ,, ,, भारत-भारती ,, ,,

४१- ,, ,, मंगल घट ,, ,,

४२-डा०एम० एस० जैन आधुनिक भारत का इतिहास,मैकमिलन एण्ड कं० बम्बई ।

४३- डा० मंगलदेव शास्त्री भारतीय संस्कृति का विकास : वैदिक धारा, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी ।

४४- डा० मंगलदेव शास्त्री- वैदिक संस्कृति के मूल तत्व ।

४५- डा० राधाकमल मुखर्जी- भारत की संस्कृति और कला । प्रथम संस्करण- राजपाल एण्ड संस, दिल्ली ।

४६- डा० रामविलास शर्मा भारतेन्दु युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

४७- ,, ,, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

४८- रामरतन भटनागर गयायन, साथी प्रकाशन, सागर ।

४९- ,, ,, हिंदी साहित्य का इतिहास, साथी प्रकाशन,सागर ।

५०- ,, ,, प्रसाद की विचारधारा, ,, ,,

५१- डा० रामदरश मिश्र हिंदी कविता आधुनिक आयाम , वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

५२- डा० रामशिरोमणि होरिल - आधुनिक हिन्दी काव्य में रूप वर्णन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

५३- रामनरेश त्रिपाठी अंवेषण ।

५४- रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा- वाराणसी ।

५५- राधाचरण गोस्वामी विधवा-विलास ।

५६- डा० राजेन्द्र मिश्र समकालीन कविता सार्थकता और समझ,कमल प्रकाशन, हिन्दी पीढ़ी ,रांची-१, प्रथम संस्करण ।

५७- रेनेवैलेक एवं आस्टिन वरित- (अनुदित) थ्योरी आफ लिटरेचर,प्रथम संस्करण,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

५८- डा० रांगेय राघव प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास,सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ।

५९- डा० एल० पी० शर्मा- आधुनिक भारतीय संस्कृति,लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा-३, प्रथम संस्करण ।

६०-लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'- जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धान्त,जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता ।

६१- ,, ,, राष्ट्रीय कविता : साहित्यिक निबंध, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना ।

६२- डा० बचनदेव कुमार- उर्वशी विचार और विश्लेषण, द्वितीय संस्करण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

६३- तीर्थ, पं० लक्ष्मणशास्त्री- जोशी- हिन्दू धर्म की समीक्षा, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, कार्यालय- बम्बई ।

६४-सं० ब्रजरत्नदास भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग-१

६५- ,, ,, ,, ,, भाग-२

६६- ,, ,, ,, ,, भाग-३

६७- डा० वचस्पति गैरोला- भारतीय संस्कृति और कला, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी-लखनऊ, प्रथम संस्करण ।

६८- डा० विजयपाल सिंह- छायावाद के प्रतिनिधि कवि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

६९- डा० विद्यानाथ गुप्त हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना ।

७०- डा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र - हिंदी का सामयिक साहित्य, समीक्षा संसद, दि- काशी ।

७१- डा० शंभूनाथ पाण्डेय हिन्दी काव्य में निराशावाद

७२- डा० शंभूनाथ सिंह हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, प्रथम संस्करण ।

७३- शान्तिप्रिय द्विवेदी सामयिकी, द्वितीय संस्करण ।

७४- शिवदत्त ज्ञानी भारतीय संस्कृति, प्रथम संस्करण,राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

७५-शिवसागर मिश्र -दिनकर एक सहज पुरुष, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।

७६- प्रो० शिवबालक राय - दिनकर, प्रथम संस्करण, यूनिवर्सल प्रेस, प्रयाग ।

७७- श्यामसुन्दरदास - राधाकृष्ण ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

७८- प्रो० सत्यकाम वर्मा -जनकवि दिनकर, भारतीय प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

७९- प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार- वैदिक संस्कृति के मूल तत्व, विजय कृष्ण एं० लखनपाल कं०- देहरादून ।

८०- डा० संतोषकुमार तिवारी - छायावादी काव्य की प्रगतिशील चेतना, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली ।

८१-स्वामी विवेकानन्द -विविध प्रसंग, श्री रामकृष्ण आश्रम-धन्तोली-नागपुर

८२- सावित्री सिन्हा -युगचारण दिनकर, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

८३- ,, ,, दिनकर, द्वितीय संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

८४- सियारामशरण गुप्त मौर्य विजय, साहित्य सदन, चिरगांव-झांसी ।

८५- सुधीन्द्र हिंदी कविता में युगान्तर ।

८६- सुमित्रानंदन पंत रश्मिबंध, साहित्य भवन, प्रा० लि०, इलाहाबाद ।

८७- ,, ,, उत्तरा ,, ,,

८८- ,, ,, मुक्ताभ ,, ,,

८९- ,, ,, युगवाणी ,, ,,

९०- ,, ,, पल्लव ,, ,,

९१- ,, ,, ग्राम्या ,, ,,

९२- डा० सुनीति -दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना-लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, शिक्षा साहित्य के प्रकाशन, आगरा-३

९३- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला- परिमल, दुलारेलाल भार्गव, लखनऊ ।

९४- ,, ,, तुलसीदास, भारती भंडार-इलाहाबाद ।

९५- ,, ,, अनामिका ,, ,,

९६- सोहनलाल द्विवेदी -विक्रमादित्य

९७- हजारीप्रसाद द्विवेदी अशोक के फूल, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई ।

९८- ,, ,, हिन्दी साहित्य का इतिहास

९९- डा० हरिदत्त वेदालंकार - भारत का सांस्कृतिक इतिहास, द्वितीय संस्करण ।

१००- हरिभाउ उपाध्याय -आधुनिक भारत

१०१- हरिवंशराय बच्चन -कवियों में सौम्य पंत

१०२- डा० हुमायूं कबीर -भारतीय परंपरा, प्रबंधक प्रकाशन शाखा, दिल्ली ।

१०३- डा० हुकुमचन्द राजपाल - आधुनिक काव्य में नवीन जीवन-मूल्य ।

१०४- श्रीराम कृष्ण देव की वाणी- श्रीरामकृष्ण आश्रम-धन्तोली-नागपुर ।

१०५- श्री रामकृष्ण उपदेश -नवम संस्करण ,, ,,

१०६- श्रीधर पाठक - मनोविनोद

१०७- डा० श्रीराम मेहरोत्रा - साहित्य का समाज शास्त्र : स्थापना और मान्यता, प्रथम संस्करण, रचना प्रकाशन-वाराणसी ।

--

अंग्रेजी के आधार ग्रन्थ

1 . Aurbindo	On our National problem_Published by Aurbindo library_Ed.1952
2. Dr.D.N.Roy	The spirit of Indian Civilization_Ed.1938
3. Dr.D.S.Sharma	Hinduism through the ages.II Edition. Bharatiya Vidya Bhawan,Chanpoli,Bombay.
4. Edvin R.A.Seligman	Enajclopaedia of Social Sciences_Ed.1954 Vol.IV.
5. J.L.Nehru	The discovery of India Pub.Vinit,Govt.of India, New Delhi.
6. Kewal Motwani	India, A syvithesis of Culture_Ed.1950 Chapter_IV
7. Major B.D.Basu	The rise of christian power in India.
8. Dr. Nalinax Dutt	History & Culture of the Indian People_ Bhartiya Vidya Bhawan,Bombay.
9. Dr. P.K.Acharya	Elements of Hindu Culture & Sanskrit. II Edition.
10.Dr.R.K.Mookerji	Hindu civilization_Ed.1950
11. Dr.R.C.Majumdar	History & Cluture of the Indian People_ Vol. VI Bhartiya Vidya Bhawan,Bombay.
12. Dr.Radhakrishnan	The Heart of Hindustan_Ist Edition. J.A.Natisan,Madras.
13. Swami Vivekanand	From Colombo to Almova_ Shri Ramkrishan Mission,Nagpur.
14.Dr.S.Radhakrishnan	Culture Heritage of India,Vol.I to IV Ramkrishna Centenary Publication,Bellur
15.K.M.Munshi	Our Greatest Need,Bhartiya Vidya Bhawan_ Bombay.

<u>पत्र- पत्रिकाएं :</u>

१- कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक

२- कल्पना अंक १४७,सन् १९६४

३- सं० महावीरप्रसाद द्विवेदी- सरस्वती भाग-२ लेखक शंकर

४- धर्मयुग- २२ सितम्बर १९७१

५- दिनकर स्मृति अंक, मित्र परिषद-कलकत्ता,१९७८
११५ ए, चितरंजन एवैन्यू-कलकत्ता-७३

६- ब्राह्मण -संपादक-प्रतापनारायण मिश्र, ब्राह्मण प्रैस,कानपुर

७- दिनमान

८- साप्ताहिक हिन्दुस्तान ।

--

परिशिष्ट 'ग' - अन्य-आधार ग्रंथ

१- डा० आबिद हुसैन	भारत की राष्ट्रीय संस्कृति
२- उमेशचन्द्र मिश्र	प्रगतिवादी काव्य
३- प्रो० कपिल	दिनकर और उनकी काव्य कृतियां
४- डा० कमलाप्रसाद पाण्डे	छायावादोत्तर हिंदी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।
५- कान्तिमोहन शर्मा	कुरुक्षेत्र- मीमांसा
६- डा० कृष्णामोहन	भारतेन्दुयुगीन काव्य परंपरा और प्रतिफलन।
७- डा० केसरीनारायण शुक्ल	आधुनिक काव्य-धारा के सांस्कृतिक स्रोत।
८- श्री कैलाशचन्द्र	दिनकर काव्य कला और दर्शन।
९- डा० गायत्री समन वर्मा	कवि कालिदास के ग्रंथों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति।
१०- डा० गुलाबराय	भारतीय संस्कृति की रूपरेखा।
११- गोपीनाथ कविराज	भारतीय संस्कृति और साधना।
१२- सं० गोपीकृष्ण कौल	दिनकर सृष्टि और दृष्टि।
१३- डा० छोटेलाल दीक्षित	दिनकर का रचना संसार।
१४- जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी	दिनकर व्यक्तित्व और कृतित्व।
१५- सं० जगदीश चतुर्वेदी	आधुनिक हिन्दी कविता।
१६- डा० जितराम पाठक	आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास।
१७- डा० ज्योतिप्रसाद जैन	भारतीय इतिहास एक दृष्टि।
१८- डा० टीकाराम शर्मा, डा० सुशीला शर्मा	उर्वशी संवेदना और शिल्प।
१९- डा० टेकसाप्रसाद शर्मा	द्विवेदीयुगीन साहित्य समीक्षा
२०- तारकनाथ बाली	दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र।

२१- सं० देवराज	भारतीय संस्कृति ।
२२- ,,	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन ।
२३- द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन ।
२४- ,, ,,	साकेत में काव्य संस्कृति और दर्शन ।
२५- देवेन्द्र इस्सर	साहित्य और आधुनिक युग बोध ।
२६- नेमिचन्द्र जैन	दिनकर की काव्य साधना ।
२७- ,,	कुरुक्षेत्र एक अध्ययन ।
२८- श्रीमती एन० लक्ष्मी	दिनकर और उनका काव्य ।
२९- सं० प्रतापचन्द्र	राष्ट्रकवि दिनकर और उनकी साहित्य साधना ।
३०- परशुराम शुक्ल विरही	आधुनिक हिन्दी काव्य में यथार्थवाद ।
३१ -डा० प्रेमवती गुप्त	दिनकर व्यक्तित्व और कृतित्व ।
३२- प्रताप साहित्यालंकार	रश्मिरथी समीक्षा ।
३३- प्रेमलता बाफना	पंत का काव्य ।
३४- पुष्पा थरेजा	भारतेन्दु युगीन काव्य में राष्ट्रीय भावना ।
३५- बी आर सानी	आधुनिक भारतीय संस्कृति का इतिहास ।
३६- डा० भगवतशरण उपाध्याय-	भारतीय कला और संस्कृति की भूमिका ।
३७- डा० बलदेवप्रसाद मिश्र	भारतीय संस्कृति ।
३८- ,, ,,	भारतीय संस्कृति को गोस्वामी तुलसीदास का योगदान।
३९- बी० एन० लूनिया	भारतीय संस्कृति की झलक ।
४०- बी एल अत्रे	भारतीय संस्कृति ।
४१- मनमोहनलाल शर्मा	भारतीय संस्कृति और साहित्य
४२- श्री मुरलीधर श्रीवास्तव	दिनकर की काव्य-साधना ।
४३- डा० यतीन्द्र नाथ तिवारी	दिनकर की काव्य भाषा ।

४४- रवीन्द्रनाथ दरगन	-छायावादी काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना ।
४५- राजकिशोर सिंह	- भारतीय संस्कृति ।
४६- डा० रांगेय राघव	-काव्य यथार्थ और प्रगति ।
४७- डा० राधेश्याम कौशिक	- कवि दिनकर
४८- डा० राजपाल शर्मा	युगचेता दिनकर ।
४९- डा० रामदरश मिश्र	हिन्दी कविता- तीन दशक ।
५०- डा० रजनी उपाध्याय	- भारतीय संस्कृति का उत्थान ।
५१- डा० रामजी उपाध्याय	-भारत की सांस्कृतिक साधना ।
५२- रमाशंकर तिवारी	दिनकर की उर्वशी ।
५३- डा० रामेश्वर गुप्त	हमारी संस्कृति ।
५४- डा० राधाकृष्णन	भारतीय संस्कृति कुछ विचार
५५- डा० शेखरचन्द्र जैन	राष्ट्र कवि दिनकर एवं उनकी काव्य-कला ।
५६- डा० श्यामा मालवीया	-कवि दिनकर की सांस्कृतिक शब्दावली का अध्ययन ।
५७- पं० शिवचन्द्र शर्मा	दिनकर और उनकी काव्य प्रवृत्तियां
५८- शंकर कलवड़े	आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना ।
५९- शिवशेखर मिश्र	-भारतीय संस्कृति में आर्येतरांश
६०- डा० सतीशकुमार भार्गव	उर्वशी एक नवीन दृष्टि

--